49

जब परमेश्वर स्मरण करता है

(15:1, 6, 7; 16:1-9, 19)

प्रकाशितवाक्य 16 पढ़ने पर ऐसा लगता है, जैसे यूहन्ना ने ''परमेश्वर के बदला लेने वाले क्रोध की सभी कहानियों से भय को लेकर उसे अविश्वासी संसार पर विनाश के एक अंतिम भयंकर प्रलय में डाल दिया हो।''[1] परमेश्वर के बढ़े हुए क्रोध के बारे में यूहन्ना के विवरण के बीच, इनसे अधिक भयभीत करने वाले शब्द नहीं हैं: ''और बड़े बाबुल का *स्मरण* परमेश्वर के यहां हुआ, कि वह अपने क्रोध की जलजलाहट की मदिरा उसे पिलाए'' (16:19ख)।[2]

हमारा परमेश्वर ''दयालु और अनुग्रहकारी ईश्वर है, जो विलम्ब से कोप करने वाला और अति करुणामय है'' (भजन संहिता 86:15)। उसके धीरज का जवाब नहीं (रोमियों 2:4; 1 पतरस 3:20)। इसी कारण, कई बार ऐसा लग सकता है कि परमेश्वर मनुष्य की लज्जाजनक अवज्ञा को भूल गया है, परन्तु परमेश्वर भूला नहीं है। वह तब तक मनुष्य से याचना करता है; उसे चेतावनी देता है-जब तक यह न लगे कि अब प्रयास करने का कोई लाभ नहीं है। फिर परमेश्वर हर उस पाप को जो क्षमा नहीं किया गया, हर उस पाप को जिसके लिए मन नहीं फिराया गया, स्मरण करता है और अपना क्रोध बहा देता है! अध्याय 16 इसी के बारे में है। क्रोध के कटोरों से परमेश्वर हमें यही सिखाना चाहता होगा।

परमेश्वर का क्रोध इकट्ठा हुआ (15:1, 6, 7; 16:1)

15:1 में बताया गया है कि ''सात स्वर्गदूत जिन के पास सातों पिछली विपत्तियां थीं, क्योंकि उन के हो जाने पर परमेश्वर के प्रकोप का अन्त है।'' 15:6 में ''वे सातों स्वर्गदूत जिन के पास सातों विपत्तियां थीं, ... मन्दिर से निकले।'' 15:7 में ''उन चारों प्राणियों में से एक ने उन सात स्वर्गदूतों को परमेश्वर के प्रकोप से भरे हुए सात सोने के कटोरे दिए।'' 16:1 में एक आवाज़ ने ''ऊंचे शब्द से उन सातों स्वर्गदूतों'' से कहा कि ''जाओ, परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उण्डेल दो।'' (परमेश्वर के क्रोध के सोने के कटोरे उण्डेलते हुए स्वर्गदूत का चित्र देखें।) उसके बाद अध्याय 16 उन कटोरों के खाली होने को दिखाता है।

जैसा कि पिछले पाठ में कहा गया था, यह ईश्वरीय न्याय का तीसरा घटनाचक्र है: पहले हमने सात मुहरें (अध्याय 4 से 7), फिर सात तुरहियां (अध्याय 8 से 11) और अब सात कटोरे (अध्याय 15 और 16) देखे।[3] ये तीनों कहानियां आपस में बहुत मिलती-जुलती हैं: (1) प्रत्येक का आरम्भ चार बहुत मिलते-जुलते दर्शनों से होता है, जिनके बाद तीन थोड़ा बहुत मिलते जुलते दर्शन हैं। (2) प्रत्येक में तीन बातें हैं, जिनसे रोमी साम्राज्य का पतन हुआ: ये प्राकृतिक आपदा, भीतरी क्लेश और बाहरी आक्रमण हैं। (3) प्रत्येक में छठे और सातवें दर्शन में रुकावट है।[4] (4) प्रत्येक परमेश्वर की सामर्थ के प्रदर्शन से समाप्त होते हैं। परन्तु शृंखला के अन्तिम दो दर्शन *विशेषकर* एक-दूसरे से बहुत जुड़े हुए हैं। उनके सामान्य तत्वों पर ध्यान दें:

तुरहियां	**कटोरे**
(प्रकाशितवाक्य 8-11)	(प्रकाशितवाक्य 16)
1. पृथ्वी	1. पृथ्वी
2. समुद्र	2. समुद्र
3. नदियां और नाले	3. नदियां और नाले
4. सूर्य/आकाशीय वस्तुएं	4. सूर्य
5. सताव	5. पीड़ा
6. फरात और सेना	6. फरात और सेना

इस सम्बन्ध के कारण कटोरों को समझने के लिए पहले तुरहियों पर विचार करना आवश्यक है:[5] तुरहियों का अध्ययन करते हुए, हमारा मुख्य ध्यान *पाप के प्रभाव* पर था: संसार पर पाप का प्रभाव (पहली चार तुरहियां), व्यक्ति पर (पांचवीं तुरही) और अन्यों पर (छठी तुरही)। संसार पर पाप के प्रभाव के सम्बन्ध में हमने आंधियों, तूफ़ानों, भूकम्पों और जल-प्रलयों जैसी प्राकृतिक आपदाओं की बात की थी। व्यक्ति पर पाप के प्रभाव के सम्बन्ध में हमने हीन भावना के साथ अन्य परिणामों के संताप की बात की थी। दूसरों पर पाप के प्रभाव के सम्बन्ध में, पाप के दूरगामी परिणामों के उदाहरण के रूप में युद्ध का इस्तेमाल किया गया था। हमने सुझाव दिया था कि परमेश्वर मनुष्यजाति को *चेतावनी* देने और लोगों को पाप से अपनी ओर मोड़ने के लिए इन परिणामों की अनुमति देता है।

तुरहियों और कटोरों के बीच कई समानताएं देखी जा सकती हैं, परन्तु हमें कटोरों को केवल ''पुन: प्रसारण'' के रूप में ही नहीं मानना चाहिए।[6] समानताएं होना महत्वपूर्ण है, परन्तु भिन्नताएं होना भी आवश्यक है:

(1) तुरहियों और कटोरों का *उद्देश्य* अलग था: तुरहियों से मनुष्य आम तौर पर अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित थे; तीसरी तुरही तक तो मनुष्यों का उल्लेख भी नहीं था (8:11)। इसके विपरीत पहले कटोरे के आरम्भ से ही मनुष्यों को निशाना बनाया गया; विशेषकर उन्हें ''जिन पर पशु की छाप थी और जो उसकी मूरत की पूजा करते थे'' (16:2)। परमेश्वर का क्रोध उण्डेले जाने पर कोई पुकार नहीं सुनी जाएगी।

(2) तुरहियों और कटोरों की *घनता* में अन्तर था: आमतौर पर तुरहियों ने केवल एक तिहाई भाग को प्रभावित किया (8:7-12; 9:15, 18)। कटोरों पर ऐसी कोई सीमा नहीं लगी (देखें 16:3)। परमेश्वर का क्रोध उण्डेले जाने पर कोई *संयम* नहीं होगा।

(3) तुरहियों और कटोरों के काम की *फुर्ती* में अन्तर था: कटोरों वाले स्वर्गदूतों को केवल एक आज्ञा दी गई थी (16:1), जिसके बाद उन्होंने एक-एक करके जल्दी से कटोरे उण्डेल दिए। पांचवां कटोरा उण्डेले जाने के समय (16:8) लोगों को पहला कटोरा उण्डेले जाने से हुए घाव अभी भी ताजा थे (16:2, 9)। परमेश्वर का क्रोध उण्डेले जाने पर, किसी प्रकार की देरी नहीं होगी।

ये पहले तीनों अन्तर सबसे महत्वपूर्ण अन्तर का भाग हैं: (4) तुरहियों और कटोरों का *उद्देश्य* अलग था। जैसा कि पहले ही ध्यान दिलाया गया है कि बेशक तुरहियों से पीड़ा और क्लेश हुआ (और कुछ सीमा तक मृत्यु), परन्तु उनका मुख्य उद्देश्य *चेतावनी* देना था।[7] परमेश्वर पापी मनुष्य का ध्यान अपनी ओर लगाने का प्रयास कर रहा था। तुरहियों के उद्देश्य को पतरस के शब्दों में संक्षिप्त किया जा सकता है: ''प्रभु ... तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो; वरन यह कि सबको मन फिराने का अवसर मिले'' (2 पतरस 3:9)।

दूसरी ओर कटोरों का मुख्य उद्देश्य चेतावनी देना नहीं, बल्कि *दण्ड* देना था।[8] कटोरे ''परमेश्वर के *क्रोध से* भरे हुए'' थे (15:7; 15:1; 16:1, 19 भी देखें)। ''क्रोध'' शब्द यूनानी के *thumos* का अनुवाद है, जिसका अर्थ ''अत्यधिक क्रोध, सनक'' है,[9] जो ''भावनाओं की उत्तेजित स्थिति, भीतरी रोष से फूटा क्रोध'' है।[10]

इसके अलावा इन विपत्तियों या कटोरों को ''पिछली'' कहा गया ''क्योंकि उन के हो जाने पर परमेश्वर के प्रकोप का *अन्त* है''[11] (15:1)। यूनानी शब्द के अनुवाद ''अन्त'' का अर्थ है ''पूरा हुआ'' या ''समाप्त हुआ''।[12] इसका इस्तेमाल ''पूरा, सम्पूर्ण, परिपक्व होने को'' के लिए होता है।[13] यीशु ने क्रूस पर से ''पूरा हुआ है'' पुकारते हुए इसी शब्द का इस्तेमाल किया है (यूहन्ना 19:30)। इस शब्द से यह संकेत नहीं मिलता कि *सब कुछ* समाप्त हो गया या पूरा हो गया, बल्कि इसका अर्थ वही है, जिस पर चर्चा की जा रही है।[14] प्रकाशितवाक्य 15 और 16 में विचाराधीन विषय मनुष्य के साथ परमेश्वर का व्यवहार है। परमेश्वर ने मनुष्य की उदासीनता के खोल को तोड़ने की हर कोशिश की है, पर कोई लाभ न हुआ। इसलिए परमेश्वर के लिए उसे ''पूरा'' करने का समय आ गया था, जो उसने आरम्भ किया था। परमेश्वर के लिए मनुष्य के पाप को स्मरण करने का समय आ गया था!

हम में से कइयों को याद आ सकता है कि जब हमारी माताएं कहती थीं कि ''आखिरी बार कहती हूं'' तो उनके कहने का क्या अर्थ होता था। उसने धीरज से हमारी बातें सही होती थीं, हमें बार-बार सावधान किया था, हमें बार-बार सतर्क किया था। परन्तु एक समय आया जब उसका सब्र टूट गया और हमने सुना ''मैंने कहा था!'' ''आखिरी बार कहती हूं'' का अर्थ होता था कि हमारे लिए अपने कामों के परिणाम भुगतने का समय आ चुका था। अध्याय 15 और 16 पश्चात्ताप न करने वाले संसार से परमेश्वर के यह कहने का वर्णन

हैं कि ''आखिरी बार कहती हूं।''[15]

कई बार, जंगली इलाकों में गाड़ी चलाते हुए, मैंने ऐसे चिह्न देखे हैं, जिनमें कहा गया होता है ''अन्तिम अवसर'': ''पचास मील जाने के लिए पेट्रोल का अन्तिम अवसर,'' ''पानी मिलने का अन्तिम अवसर,'' ''खाना मिलने का अन्तिम अवसर'' और ऐसे कई शब्द। एक-दो बार तो मुझे रास्ते में पड़ी खाली कारें भी मिली हैं; स्पष्ट है कि उनके ड्राइवरों ने उन चिह्नों पर विश्वास नहीं किया था। निश्चय ही मनुष्य द्वारा लगाए गए चिह्नों पर विश्वास नहीं किया जा सकता; परन्तु जब परमेश्वर कहता है कि ''अन्तिम अवसर,'' तो उसका अर्थ यही होता है!

अध्याय 15 और 16 चित्र के रूप में गलातियों 6:7 की सच्चाई को बयान करते हैं: ''धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।'' परमेश्वर का क्रोध उण्डेले जाने पर, पापियों को मन फिराने का और अवसर नहीं दिया जाएगा।

टीकाकारों द्वारा चर्चा की जाती है कि अध्याय 15 और 16 में बताया गया न्याय अस्थाई है या अन्तिम संदर्भ (पुस्तक का संदर्भ और समय का संदर्भ दोनों) इस विचार का समर्थन करते हैं कि ये वचन रोमी साम्राज्य के विनाश का संकेत हैं। बड़ी नगरी बाबुल का गिरना कटोरों का चरम है (16:19), जो अगले अध्याय के रोम नगर के रूप में पहचाना लगता है (17:9, 18)। परन्तु पहली शताब्दी के मसीही इन अध्यायों से उनके सताने वाले रोमियों का न्याय करने के लिए परमेश्वर का आना समझते होंगे, जबकि लगता है कि कुछ आयतें (जैसे 16:18-21) न्याय के दिन की हैं।

अध्याय 16 की तीन प्रासंगिकताएं बनाकर हम गलती नहीं करेंगे: (1) यूहन्ना के समय में इस अध्याय की विशेष और विशिष्ट प्रासंगिकता रोमी साम्राज्य की थी। (2) यह अध्याय यह भी बताता है कि परमेश्वर ने *किसी की भी* उदासीनता और आज्ञा न मानने को अनिश्चितकाल के लिए सहन नहीं करना था, चाहे वह व्यक्ति हो, चाहे राष्ट्र। भजन लिखने वाले ने लिखा है, ''दुष्ट अधोलोक में लौट जाएंगे, तथा वे सब जातियां भी जो परमेश्वर को भूल जाती हैं'' (भजन संहिता 9:17)। इतिहास इस वास्तविकता के उदाहरणों से भरा पड़ा है। प्रसिद्ध इतिहासकार आरनोल्ड टोयनबी के अनुसार इतिहास के पन्नों पर चलने वाली उन्नीस सभ्यताओं में से सोलह नष्ट हो चुकी हैं।[16] जिम मैक्गुइगन ने ज़ोर दिया कि ''पुस्तक में बताए गए नियम हर जाति और हर युग के साथ परमेश्वर के व्यवहारों के लिए प्रासंगिक होते हैं, जिस कारण ये आज भी उतने ही ताजा हैं, जितने पहले थे।''[17] (3) अध्याय 16 में उण्डेला गया क्रोध ''अन्त के दिन'' (यूहन्ना 12:48) अधर्मियों पर पड़ने वाले परमेश्वर के क्रोध का रूपक है। एडवर्ड मैक्डोवल ने कहा है:

> नये नियम में सांसारिक और परमेश्वर के क्रोध की अन्तिम अभिव्यक्ति में कोई स्पष्ट अन्त नहीं है। इतिहास में दिखाया गया क्रोध अन्तिम न्याय में इसके अन्तिम रूप में माना जाना चाहिए। इसलिए इतिहास में परमेश्वर के क्रोध का हर प्रदर्शन आने वाले क्रोध का पूर्वस्वाद है।[18]

हम में से हर किसी को इस अध्याय से कुछ सबक सीखने आवश्यक हैं: (1) न्याय होना तय है। (2) परमेश्वर चाहता है कि सब लोग उसके पास आ जाएं और वह उन्हें वापस लाने का हर प्रयास करता है। (3) यदि हम उसके अनुग्रह को ठुकराते रहें तो हमारे मन कठोर हो जाएंगे। (4) ऐसा होने पर, हमें उसके क्रोध से कोई नहीं बचा सकता! तब हमें इब्रानियों 10:31 की सच्चाई पता चल जाएगी: ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है!''

परमेश्वर का क्रोध उण्डेला गया (16:1-9)

कोई विरोध करके कह सकता है, ''परन्तु जीविते परमेश्वर के हाथों में पड़ना *इतना* बुरा तो नहीं होगा।'' यदि आपको नहीं लगता कि यह विश्वास से परे भयंकर होगा, तो सात कटोरों को देखें।

इस पाठ में हम, पहले चार कटोरों का अध्ययन करेंगे और अगले पाठ में अन्तिम तीन कटोरों का। परन्तु इससे पहले कुछ और पृष्ठभूमि जान लेनी आवश्यक है। कटोरे मूलत: तुरहियों से मिलते-जुलते हैं, परन्तु उनका रूपक बहुत अलग है। इसका एक कारण यह है कि कटोरों का संकेत मिस्र पर पड़ने वाली विपत्तियों पर भारी है।[19] अध्याय 15 और 16 में पांच बार, कटोरों को ''विपत्तियां'' कहा गया है (15:1, 6, 8; 16:9, 21)। मूल दस में से पांच विपत्तियां सात कटोरों में दिखाई गई हैं:[20]

पहली विपत्ति अर्थात पानी का लहू बनना (निर्गमन 7:14-25), दूसरे और तीसरे कटोरों से मेल खाता है (प्रकाशितवाक्य 16:3-7)।

दूसरी विपत्ति अर्थात मेंढकों से देश भर जाना (निर्गमन 8:1-15), सम्भवतया तीन मेंढकों की मूरत के सुझाव थे (प्रकाशितवाक्य 16:13)।

छठी विपत्ति अर्थात मनुष्यों और पशुओं को निकले फफोले (निर्गमन 9:8-12) पहले कटोरे के परिणाम में मिलते हैं (प्रकाशितवाक्य 16:2)।

सातवीं विपत्ति अर्थात मिस्र देश का विनाश करने वाले ओले (निर्गमन 9:18-35) सातवें कटोरे के उण्डेले जाने के बाद ''ओलों की विपत्ति'' (प्रकाशितवाक्य 16:21) का प्रतिबिम्ब था।

नौवीं विपत्ति अर्थात देश पर छा जाने वाला अन्धकार (निर्गमन 10:21-29), पांचवें कटोरे वाले अंधकार जैसा ही था (प्रकाशितवाक्य 16:10, 11)।

आइए अब पहली चार ''विपत्तियों'' को देखते हैं। सामान्य की तरह, एक के बाद एक त्रासदी का कुल प्रभाव यही है कि सबसे महत्वपूर्ण क्या है, परन्तु वचन में से देखते हुए हम इन विवरणों पर टिप्पणियां करेंगे।

पहला कटोरा पृथ्वी पर उण्डेला जाता है (आयतें 1, 2)

''फिर मैंने मन्दिर में किसी को ऊंचे शब्द से उन सातों स्वर्गदूतों से यह कहते सुना'' (आयत 1क)। मन्दिर में तो केवल प्रभु परमेश्वर ही था (15:8) जिसका अर्थ यह हुआ

कि बोलने वाला वही था। उसने सात स्वर्गदूतों को आज्ञा दी, ''जाओ, परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उण्डेल दो'' (आयत 1ख)। ''सो पहिले ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उण्डेल दिया। और उन मनुष्यों के जिन पर पशु की छाप थी, और जो उसकी मूरत की पूजा करते थे, एक प्रकार का बुरा और दुखदायी फोड़ा निकला'' (आयत 2)। (पहला कटोरा का चित्र देख।)

''फोड़े'' के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द वही है, जो मिस्रियों पर आई विपत्ति में पड़े फफोलों के लिए किया गया था।[21] हम में से कइयों को याद होगा कि कंपकंपी लगा देने वाले, बुखार चढ़ा देने वाले, दर्दनाक फफोले होना कैसा लगता है। हम कल्पना कर सकते हैं कि पूरा शरीर फफोलों से भरा होना कैसा होगा! परन्तु अनुवादित ''फोड़ा'' के मूल यूनानी शब्द का अर्थ त्वचा के घाव, कैंसर और यहां तक कि कोढ़ सहित त्वचा की कोई भी समस्या हो सकता है।

इस बात को समझें कि कटोरों का अर्थ कटोरे नहीं है। फोड़े लोगों के पाप के कारण अपने ऊपर लाई गई पीड़ा और क्लेश का *प्रतीक* हैं। इसमें शारीरिक वेदना हो सकती है, परन्तु इससे भी बढ़कर है।

ये ''बुरे और दुखदायी'' फोड़े उन्हीं को निकले थे ''जिन पर पशु की छाप थी और जिन्होंने उसकी मूर्ति की पूजा की थी।'' अन्य शब्दों में जो राजा की पूजा और ऐसा कुछ करते थे। आज यह विवरण उन सब लोगों को समेट लेगा, जिन्होंने परमेश्वर का स्थान अन्य देवताओं, अन्य लोगों को दिया है (देखें निर्गमन 20:3)।

दूसरा कटोरा समुद्र पर उण्डेला जाता है (आयत 3)

''और दूसरे ने अपना कटोरा समुद्र पर उण्डेल दिया[22] और वह मरे हुए का सा लोहू बन गया, और समुद्र में का हर एक जीवधारी मर गया'' (आयत 3)।

दूसरी तुरही के बजने से समुद्र का एक *तिहाई* भाग लहू बन गया था, परन्तु अब *पूरा* समुद्र ही ''मरे हुए व्यक्ति के'' लहू जैसा अर्थात जमा हुआ बदबूदार बन गया। मैं जमे हुए लहू और मरी हुई मछलियों और अन्य समुद्री जीवों की लाशों से ढके हुए बदबूदार समुद्री किनारों की कल्पना कर सकता हूं। यह बदबू बहुत ही भयानक होगी।

फिर मैं ज़ोर देता हूं कि इस दृश्य का अर्थ अक्षरश: न लिया जाए। ऐसा कभी नहीं होगा, कि समुद्रों का पानी लहू बन जाए। यह सांकेतिक है। उस समय लोग वाणिज्य के लिए समुद्र पर निर्भर थे और मछली उद्योग भोजन का एक बड़ा स्रोत था। इस प्रकार दृश्य में आगे पाप के भयानक परिणामों पर बल देना जारी रखा गया है। पाप जीवन को बिगाड़ देता है। पाप जिसे भी स्पर्श करता है, उसे भ्रष्ट कर देता है। इसे स्पष्ट शब्दों में कहें तो पाप में से बदबू आती है! एक बार किसी प्रचारक को एक नगर के उस भाग में बुलाया गया था, जहां लोग कानून या परमेश्वर के वचन को बहुत कम महत्व देते थे। अपने इर्द-गिर्द नज़र घुमाते हुए उसने टिप्पणी की, ''मुझे यहां से पाप की बदबू आ रही है!'' हो सकता है कि पाप की अपनी कोई विशेष गंध न हो, परन्तु परमेश्वर के लोगों और स्वयं परमेश्वर को यह गंदी लगती है।

तीसरा कटोरा नदियों और जल के सोतों पर उण्डेला जाता है (आयतें 4-7)

तीसरा कटोरा दूसरे से जुड़ा है: ''और तीसरे ने अपना कटोरा नदियों और पानी के सोतों पर उण्डेल दिया और वे लोहू बन गए'' (आयत 4)।[23] (दूसरे और तीसरे कटोरें का चित्र देखें।)

नील नदी के लहू बनने के समय, मिस्रियों ने पानी निकालने के लिए कुएं खोदे थे (निर्गमन 7:24), परन्तु प्रकाशितवाक्य 16 वाली तीसरी विपत्ति के समय सोते अर्थात पानी स्रोत भी, लहू बन गए। कहीं पानी नहीं मिला। लियोन मौरिस ने टिप्पणी की है, ''पीने के लिए पानी के बिना मनुष्य जाति का अस्तित्व नहीं रह सकता।''[24] जेम्स स्ट्राउस का अवलोकन है कि ''पानी की कमी के कारण आने वाला कष्ट सबसे बड़ा मानवीय कष्ट है।''[25]

क्या इसका अर्थ यह है कि एक दिन पूरे संसार का पानी लहू बन जाएगा? इसका अर्थ शब्दश: लेने वाले ऐसा ही सोचते हैं। एक लेखक ने तो यह सुझाव दे दिया कि ''कोका-कोला लेने वालों की बहुत बड़ी कतार लगेगी।''[26] ज़बर्दस्त उत्तर आज भी यही है कि ''नहीं, इसका अर्थ शब्दश: *न* लिया जाए। यह तो केवल संकेत है!'' लहू का रूपक दूसरे और तीसरे कटोरों के सम्बन्ध में इस्तेमाल किया गया है, क्योंकि आत्मा यहां कुछ समझाना चाहता है, जिसका 6 और 7 आयतों में ज़ोर दिया गया है।[27] ''तब मैंने पानी के स्वर्गदूत को यह कहते सुना, 'हे पवित्र,[28] जो है और जो था,[29] तू न्यायी है और तू ने यह न्याय किया। क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों और भविष्यवक्ताओं का लहू बहाया था, और तू ने उन्हें लहू पिलाया; क्योंकि वे इसी योग्य हैं।'''

''पानी के स्वर्गदूत'' वाक्यांश बाइबल में और कहीं नहीं मिलता। यह वह स्वर्गदूत हो सकता है, जिस पर पृथ्वी के जल की ज़िम्मेदारी थी, या यह वह स्वर्गदूत हो सकता है, जिसने नदियों और जल के सोतों पर कटोरा उण्डेला था। नाटक में उसका उद्देश्य यह ज़ोर देना था कि परमेश्वर ने अपने क्रोध को उण्डेलकर उचित न्याय किया था।[30] NIV में है ''इन न्यायों में धर्मी है।''

परमेश्वर के कार्य के न्याय पर इन चौंकाने वाले शब्दों में ज़ोर दिया गया है: ''क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों और भविष्यवक्ताओं का लहू बहाया था,[31] और तू ने उन्हें लहू पिलाया; क्योंकि वे इसी योग्य हैं।''[32]

मुझे स्पेनी खोजी फ्रैंसिस्को पिज़ेरो की कहानी याद आती है, जिसने सोने से अपने प्रेम के कारण दक्षिणी अमेरिका के इंका साम्राज्य को नष्ट कर दिया था। दंतकथा के अनुसार, पिज़ेरो को मार देने के बाद, उसके शत्रुओं ने उसके मुंह में पिघलता सोना डालते हुए कहा था, ''तुझे सोना चाहिए; यह ले सोना!''[33]

एक अर्थ में परमेश्वर उनसे, जिन्होंने मसीही लोगों का लहू बहाया था, कह रहा था, ''तुम्हें लहू चाहिए; तुम्हें लहू ही मिलेगा-जिससे तुम्हारे मुंह भर जाएं, तुम्हारे पेट भर जाएं, तुम्हारे नथने भर जाएं, इतना लहू कि तुम्हारे गले तक आ जाए और तुम तंग पड़ जाओ!'' रोम के लिए उसका वही संदेश था, जो एदोम के लिए था: ''जैसा तू ने किया है, वैसा ही तुझ से भी

किया जाएगा, तेरा व्यवहार लौटकर तेरे ही सिर पर पड़ेगा'' (ओबद्याह 15ख)।

आयत 7 में दो बहुत बड़ी सच्चाइयां मिलती हैं। पहली यह है कि परमेश्वर के क्रोध को पाने वालों ने खुद ही मुसीबत मोल ली थी।

एक लड़का था जो हाई स्कूल में पढ़ते हुए नशा करने वालों की संगत में पड़ गया। वह भी नशा लेने लगा। जब पिता को पता चला तो उसने अपने बेटे को समझाया। उसने बताया कि यह कितना खतरनाक है। उसने उसे नशे और उसके परिणामों के बारे में समझाने के लिए किताबें पढ़ाईं। पिता ने विशेषकर उन लोगों के जीवनों के बारे में बताया जो नशा करने के कारण बर्बाद हो गए थे। लड़का अपने पिता के ''दकियानूसी'' विचारों पर हंसता था। पिता ने अपने लड़के को चेतावनी दे डाली, ''यदि तुम फिर नशा लोगे, तो मैं तुम्हें बेदखल कर दूंगा और घर से निकाल दूंगा।'' लड़का फिर नहीं माना और पिता ने जो कहा था उसे पूरा किया। पिता ने उस लड़के की सहायता करने की हर कोशिश की। उसने प्रार्थना की; याचना की; मिन्नतें कीं। जब वह लड़का नशे का आदी हो गया, तो उसने उसके इलाज के लिए पैसे देने चाहे। लड़का अपने पिता की चिंता का मज़ाक उड़ाता हुआ उसकी चेतावनियों को नज़रअन्दाज़ करता रहा। नशे की लत के लिए वह चोरी तक करने लगा। आखिर एक शनिवार रात, शराब की किसी दुकान में चोरी करने की कोशिश करते हुए उसे गोली मार दी गई और वह मर गया।[34]

उस जवान की मौत का ज़िम्मेदार कौन था? समाज? उसका परिवार? उसका पिता? हम में से अधिकतर लोग यही मानेंगे कि उस जवान ने खुद अपनी मौत खरीदी। उसके हठीपन और बात न मानने के कारण उसे बचाने के लिए पिता की हर कोशिश नाकाम हो गई।

इसी प्रकार, परमेश्वर ने मनुष्यजाति को अपने पास लाने के लिए हर कोशिश की थी। यदि लोग परमेश्वर के प्रेम की अभिव्यक्तियों को ठुकराते और उसकी चेतावनियों को नज़रअन्दाज़ करते हैं, तो वे अपने ऊपर स्वयं न्याय लाते हैं। बहुत पहले परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा था:

> परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने, और उसकी सारी आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं आज सुनाता हूं, चौकसी नहीं करेगा, तो ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे। ...
>
> जिस-जिस काम में तू हाथ लगाए, उस में यहोवा तब तक तुझ को शाप देता, और भयातुर करता, और धमकी देता रहेगा, जब तक तू मिट न जाए, और शीघ्र नष्ट न हो जाए; यह इस कारण होगा कि तू यहोवा को त्यागकर दुष्ट काम करेगा (व्यवस्थाविवरण 28:15, 20)।

दूसरी सच्चाई यह है कि परमेश्वर के प्रबन्ध में दण्ड आम तौर पर ''अपराध के अनुसार'' होता है। बाइबल इसके उदाहरणों से भरी पड़ी है:

> फिरौन ने यहूदी बालकों को डुबोने की कोशिश की, परन्तु अन्ततः लाल समुद्र में उसकी अपनी ही सेना डूब गई। हामान ने मोर्दकै को फांसी के फंदे पर लटकाने और यहूदियों को मिटाने की योजना बनाई; परन्तु उस फंदे पर उसी को लटका

> दिया गया और उसका परिवार मिट गया (एस्तेर 7:10; 9:10)। राजा शाऊल ने परमेश्वर की आज्ञा को मानने और अमालेकियों को घात करने से इनकार कर दिया, और एक अमालेकी द्वारा उसे ही घात कर दिया गया (2 शमूएल 1:1-16)।[35]

स्वर्गदूत के बोलना बन्द करने के बाद, यूहन्ना ने एक और आवाज़ सुनी, जो एक अनजाने स्थान अर्थात *वेदी* से आ रही थी। ''हां हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे निर्णय ठीक और सच्चे हैं'' (आयत 7)। यह उस वेदी का मिश्रण है, जो हमने पहले देखी है: वह वेदी जहां शहीदों का लहू था (6:9), वह वेदी, जो पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं से जुड़ी थी (8:3)।[36] इससे पहले वेदी के सींगों में से आवाज़ आई थी (9:13); अब यह आवाज़ वेदी में से आई। आम तौर पर वेदियां बोलती नहीं हैं, परन्तु दर्शन में कुछ भी हो सकता है (वेदी के एक ओर का मुंह खुलने और उसमें से बातें निकलने की कल्पना करें)। वेदी के बोलने का उद्देश्य स्वर्गदूत की बात को महत्व देना था कि अपना क्रोध उण्डेलकर परमेश्वर ने सही किया था!

प्रकाशितवाक्य के मूल पाठकों को यह पता होना आवश्यक था कि परमेश्वर सब गलतियों को कब सुधारेगा और अपने लोगों का न्याय करेगा। आज हमारे लिए भी यह जानना आवश्यक है।

> घोषणा कर दो कि **न्याय अवश्य होगा।** पृथ्वी पर की गई हर बुराई का, एक दिन हिसाब होगा। अनाथालय के एक कोने में यह सोच रहे कि उनकी क्या गलती है, नन्हे लड़के और लड़कियों के हर आंसू; शराबी पतियों के पांवों और हाथों से लताड़ी बेहोश पड़ी हर परिश्रमी पत्नी का; ... हर शोषित और सहमी हुई युवती का, जिसका जीवन अपमान और कलंक से भरा है; कर्ज़ तले दबे हर निर्धन का; ... [अविवाहित माता-पिता] के बच्चों और बदनामी में पलने वालों का, दिन आएगा! न्याय होगा। ... यदि परमेश्वर है, तो न्याय भी होगा। और उस दिन, वेदी पुकार उठेगी, **हां,** हे प्रभु![37]

चौथा कटोरा सूर्य पर उण्डेला जाता है (आयतें 8, 9)

चौथा कटोरा खाली करने का समय आ चुका था। ''और चौथे ने अपना कटोरा सूर्य पर उण्डेल दिया'' (आयत 8क)। चौथी तुरही बजने पर, सूर्य और अन्य आकाशीय वस्तुएं *अंधकारमय* हो गई थीं (8:12); अब सूर्य की किरणें *झुलस गई* थीं: ''और उसे मनुष्यों को आग से झुलसा देने का अधिकार दिया गया।[38] और मनुष्य बड़ी तपन से झुलस गए'' (16:8ख, 9क)।[39] (पृष्ठ 127 पर चौथे कटोरे का चित्र देखें।) वचन मूलत: कहता है कि ''लोग बड़े ताप से जल गए थे।''

मेरे यह पाठ लिखने के समय दक्षिणी अमेरिका का अधिकतर भाग कई महीनों से अत्यधिक गर्मी की मार सह रहा है। आग लगने के समाचार आते हैं; कई लोग मर गए हैं; हज़ारों पीड़ित हैं।[40] 8 और 9 आयतों की तपन हाल ही की किसी भी लू से अधिक तेज़

है, परन्तु हमें कम से कम इतना विचार अवश्य मिलता है कि इस विपत्ति में क्या था। एक बार फिर मैं ज़ोर देता हूं कि यह भविष्य में होने वाली घटना नहीं है, बल्कि पवित्र आत्मा यहां पाप के भयंकर परिणामों को नाटकीय ढंग से दिखाना जारी रखता है। आज्ञा न मानने की जलन और लज्जा का किसे पता नहीं है?

पहले चार कटोरों पर फिर से नज़र डालते हुए हमें यह उम्मीद हो सकती है कि जिन पर ये कटोरे उण्डेले गए थे, वे लोग हार मानकर प्रभु को समर्पण करने को तैयार होंगे, परन्तु आयत 9 में हमें यह दुखद उत्तर मिलता है: ''और परमेश्वर के नाम की जिसे इन विपत्तियों पर अधिकार है, निन्दा की और उस की महिमा करने के लिए मन न फिराया'' (आयत 9ख)। 15 और 16 अध्यायों में इस्तेमाल किए गए निर्गमन के रूपक को ध्यान में रखते हुए, हमें पहली विपत्तियों के प्रति फिरौन की प्रतिक्रिया याद आती है। बार-बार कहा गया था कि फिरौन ने ''अपने मन को कठोर किया'' (निर्गमन 8:15, 32; 7:13; 8:19 भी देखें)।[41] जिन पर कटोरे उण्डेले गए थे, उन्होंने अपने लिए मुसीबत स्वयं ही बुलाई थी, इसके बावजूद दोष वे परमेश्वर को दे रहे थे। ऐसी प्रतिक्रिया आश्चर्यजनक है, परन्तु हम देखते हैं कि यही हर रोज़ दोहराई जाती है।[42]

तुरहियों का अध्ययन करते हुए पहली चार तुरहियों की तुलना हमने प्राकृतिक आपदाओं से की थी। पहले चार कटोरों के साथ भी यही प्रासंगिकता बनाई जा सकती है, विशेषकर पाप के विनाशकारी परिणामों से।[43] यह सच मानते हुए (कम से कम सामान्य ढंग में), आप किसी विशेष विनाश के विषय में पूछ सकते हैं, ''क्या यह तुरही (चेतावनी) है या कटोरा (दण्ड)?'' यदि आप मुझसे यह प्रश्न पूछते, तो मेरा उत्तर होता ''मुझे नहीं मालूम और न ही किसी और को मालूम है।'' विलियम हैंड्रिक्सन ने यह अवलोकन किया है, ''किसी के लिए कोई आपदा न्याय की तुरही हो सकती है, जबकि किसी और के लिए वही घटना क्रोध का कटोरा हो सकती है। इसलिए राजा हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम पर आने वाली बीमारी ने उसे तो नरक में पहुंचाया, परन्तु यह दूसरों के लिए एक चेतावनी थी।''[44]

हर दुखद घटना को चेतावनी या दण्ड के रूप में वर्गीकृत करने के प्रयास का अर्थ है कि पहले चार कटोरों की बात समझ नहीं आई। परमेश्वर नीतिवचन 13:15 जैसे पदों की सच्चाइयों को लागू करने के लिए सामान्य ढंग से ऐसी घटनाओं का इस्तेमाल करता है, ''विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है।'' विशेषकर वह उनका इस्तेमाल इस सच्चाई को लागू करने के लिए करता है कि वह दिन आएगा जब वह पाप को स्मरण करेगा!

सारांश

पहले चार कटोरों के क्रोध का अध्ययन करते हुए किसी को भी यह विश्वास हो जाना चाहिए कि किसी के पाप को परमेश्वर द्वारा याद करना कितना भयंकर है, आप पुकार सकते हैं, ''परन्तु मैंने तो पाप किया है! मेरे लिए क्या उम्मीद है?'' प्रकाशितवाक्य 16:9 को इब्रानियों 8:10-12 से संतुलित करने की आवश्यकता है:

> प्रभु कहता है कि जो वाचा मैं ... बाधूंगा, वह यह है कि मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा, और उसे उनके हृदयों पर लिखूंगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा और वे मेरे लोग ठहरेंगे। ... क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावंत होऊंगा, *और उनके पाप को फिर स्मरण न करूंगा*।

आपको कैसे मालूम कि परमेश्वर न्याय के समय आपके पापों को स्मरण *नहीं* करेगा? पहले तो स्मरण करें कि आपने क्या गलती की है (यहेजकेल 36:31),[45] और अपने पापों से मन फिराएं (लूका 13:3)। फिर याद करें कि परमेश्वर ने आपके लिए क्या किया है (2 तीमुथियुस 2:8) और प्रेम और विश्वास से उसकी ओर मुड़ें (यूहन्ना 3:16)। फिर याद करें कि बाइबल क्या सिखाती है (यहूदा 17) और बपतिस्मे में प्रभु की आज्ञा मानें (प्रेरितों 2:38)। अन्त में, विश्वासी मसीही जीवन बिताएं, उस सब को याद रखते हुए कि उससे प्रेम करना और उसकी सेवा करने का क्या अर्थ है (प्रकाशितवाक्य 2:5)। आपका नाम परमेश्वर की ''स्मरण पुस्तिका'' में होगा, जिसमें उन सब का नाम है, जो उससे डरते और उसके नाम को महिमा देते हैं (मलाकी 3:16)।

कहते हैं कि ''परमेश्वर से भागने का एकमात्र ढंग उसकी ओर भागना है'':[46] परमेश्वर के क्रोध से भागने का एकमात्र ढंग उसके अनुग्रह की ओर भागना है। परमेश्वर आपको बचाना चाहता है, परन्तु इसके लिए आपको विश्वास और आज्ञाकारिता से उसके पास आना होगा। यदि आप अभी तक नहीं आए हैं तो आज ही आ जाएं!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ के वैकल्पिक शीर्षक हैं: ''हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है'' (इब्रानियों 12:29); ''जब परमेश्वर कहता है, 'बहुत हो गया!' ''; ''जब परमेश्वर न्याय को हरी झंडी देता है''; ''जहां से वापस नहीं आ सकते।'' बैटसैल बैरट बैक्स्टर से लेते हुए इस पाठ को ''परमेश्वर के उत्तर में तूफ़ान'' कहा जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2 संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 126. [2]18:5 भी देखें। पुराने नियम में ऐसे ही शब्दों के लिए देखें यहेजकेल 21:25 और होशे 9:9. [3]पहले यह सुझाव दिया गया था कि सातवीं मुहर से सात तुरहियां बजीं जबकि सातवीं तुरही से सात कटोरों के लिए मंच तैयार हुआ। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य,1'' के पाठ ''जब मसीही लोग प्रार्थना करते हैं'' में मुहरों, तुरहियों और कटोरों पर चर्चा देखें। [4]कुछ लेखक छठे और सातवें कटोरों के बीच रुकावट या अन्तराल नहीं देखते; उनका कहना है कि 16:13-16 छठे कटोरे का अभिन्न भाग है। [5]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''परमेश्वर की जगाने की पुकार,'' ''परमेश्वर का स्व-विनाशकारी स्वभाव,'' ''नरक का पूर्व स्वाद'' और ''परमेश्वर की चेतावनियों की

अनदेखी करने की मूर्खता'' पर विचार कर सकते हैं।[6]''पुन: प्रसारण'' टेलीविज़न पर, विशेषकर ग्रीष्मकाल की मूर्खता'' पर विचार कर सकते हैं।[6]''पुन: प्रसारण'' टेलीविज़न पर, विशेषकर ग्रीष्मकाल के महीनों में दोहराए जाने वाले कार्यक्रमों के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द है। जहां लोग खेलों की घटनाओं को टेलीविज़न पर दिखाए जाने से परिचित हैं वहां ''रीप्ले'' शब्द इस्तेमाल हो सकता है।[7]इस पुस्तक में ''ध्यान लगाए रखना'' पाठ में तीन शृंखलाओं की *कड़ी* पर नोट्स देखें।[8]मैं ''*मुख्य* उद्देश्य'' शब्द का इस्तेमाल इस सम्भावना के कारण करता हूं कि ''उन्होंने मन न फिराया'' (16:9, 11) वाक्यांश से संकेत मिलता है कि लोग मन फिरा *सकते* थे। यदि कटोरा अस्थाई न्याय (रोमी साम्राज्य का) को दर्शाता है, तो उससे सीधे तौर पर अप्रभावित रहने वाले लोग रोम की दशा से सबक लेकर परमेश्वर की ओर मुड़ सकते थे। इस कारण यह सम्भावना रहती है कि एक गौण उद्देश्य कुछ लोगों को चेतावनी देना और उन्हें मन फिराने के लिए लाना था। परन्तु मुख्य उद्देश्य कठोर मन वाले अपश्चातापी लोगों को *दण्ड देना* था।[9]डब्ल्यू.ई.वाइन, मैरिल एफ.अंगर एंड विलियम व्हाइट जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 688. [10]वही, 26. वाइन ने ''क्रोध'' के लिए अधिक प्रसिद्ध शब्द *orge,* और *thumos* का इस्तेमाल करते हुए *orge* को ''बदला लेने के विचार से मन की अधिक स्थापित या बनी रहने वाली स्थिति,'' कहा। परमेश्वर के क्रोध *(thumos)* का बदला लेने का कोई उद्देश्य नहीं है।

[11]KJV में ''filled up'' है, जो सही-सही इस अवधारणा को नहीं दिखाता। NKJV में ''complete'' है। [12]*द अनालिटिकल ग्रीक लेक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, 1971), 401. [13]जेम्स एम एफर्ड *रैवलेशन :फ़ॉर टुडे* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1989), 97. [14]यानी प्रकाशितवाक्य में इस्तेमाल शब्द इस प्रश्न को सुलझा नहीं देते कि यह चर्चा न्याय के दिन पर ही है। [15]आप लोगों और जातियों को परमेश्वर के ''मैंने कहा था'' के बाइबल के उदाहरण जोड़ सकते हैं, उदाहरण के लिए अहाब और यहेजकेल, बाबुल, इस्राएल, और हेरोदेस के। [16]यह वाक्य डब्ल्यू बी.वेस्ट जूनि. *रैवलेशन थ्रू फर्स्ट सैंचुरी ग्लासिस,* संपा.बॉब प्रीचर्ड (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1997), 108 से लिया गया था। [17]जिम मैक्गुइगन *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 227. [18]एडवर्ड ए. मैकडोवल, *द मीनिंग एंड मैसेज ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 164. [20]पिछले पाठ में हमने अध्याय 15 और 16 में निर्गमन की भाषा के इस्तेमाल पर जोर दिया था। आप समय निकालकर मूल मिस्री विपत्तियों को विस्तार में बता सकते हैं।

[21]यह बात पुराने नियम के यूनानी अनुवाद (सप्तति) में इस्तेमाल शब्दों के आधार पर है। [22]दूसरे स्वर्गदूत के अपने कटोरे को उण्डेलने का चित्रण पिछले पाठ में मिल सकता है। [23]मैंने ब्रायन वाट्स से कहा कि दूसरे और तीसरे कटोरों के चित्र को मिला दे क्योंकि दोनों का आपस में निकट सम्बन्ध है। उसके पिछले चित्रण में आप तीन स्वर्गदूतों को देखेंगे। बाईं ओर वाला दूसरा स्वर्गदूत है, जिसने समुद्र पर अपना कटोरा पहले ही खाली कर दिया है। बीच वाला स्वर्गदूत अपना कटोरा पृथ्वी के जल पर खाली कर रहा है। दाईं ओर वाला स्वर्गदूत ''पानी का स्वर्गदूत'' है, जो परमेश्वर की महिमा कर रहा है, क्योंकि वह धर्मी है। (बेशक ''पानी का स्वर्गदूत'' किसी भी प्रकार अलग स्वर्गदूत नहीं हो सकता; अगले पाठ में टिप्पणियां देखें।) [24]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं.,1987), 188. [25]जेम्स डी. स्ट्राउस, *द सीयर, द सेवियर, एंड द सेवड,* बाइबल स्टडी टैक्स्ट बुक सीरीज़ (जौप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस, 1963), 222. [26]मैक्गुइगन, 237 में उद्धृत हाल लिंडसे। [27]तीसरी तुरही बजने पर पृथ्वी का पानी भी पीने के अयोग्य हो गया, परन्तु क्योंकि इसे कड़वा कर दिया गया था। *लहू* का रूपक यह जोर देने के लिए कि ''दण्ड अपराध के अनुकूल है'' तीसरे कटोरे के सम्बन्ध में इस्तेमाल किया गया है। [28]स्वर्गदूत के शब्द अध्याय 15 में मूसा के गीत और मेमने के शब्द ही हैं। परमेश्वर के ''पवित्र'' होने के बारे में, देखें 15:4. [29]11:17 की तरह, तीसरा शब्द ''जो आने वाला है'' इस्तेमाल नहीं किया गया, क्योंकि प्रभु न्याय करने आ गया था। *टुथ :फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 3'' के पाठ ''अन्तिम तुरही'' में 11:17 पर टिप्पणियां देखें। [30]देखें नहेम्याह 9:33.

[31]''पवित्र लोगों और भविष्यवक्ताओं'' दो अलग-अलग तरह के लोगों को नहीं कहा गया, बल्कि यह

''*सभी* मसीही लोगों के लिए जिनमें उनकी अगुआई करने वाले भी हैं'' कहने का ढंग है। भविष्यवक्ता आरम्भिक कलीसिया के अगुवों में शामिल थे (देखें इफिसियों 4:11)।[32]मूल धर्मशास्त्र में मूलत: ''वे योग्य हैं'' है (देखें KJV)। पौलुस ने ''योग्य'' शब्द का इस्तेमाल रोमियों 1:32 में भी ऐसे ही किया जब उसने कइयों को ''मृत्यु के दण्ड के योग्य'' कहा।[33]यह उदाहरण अबिलेन, टैक्सस के सदर्न हिल्स चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में 2 जून 1991 को दिए जॉन रिस्से के संदेश ''द फाइनल साइकल ऑफ जजमेंट'' से लिया गया था। विवरण डेविड जी.बेसाइल के *द 1997 ग्रोलियर मल्टीमीडिया इन्साइक्लोपीडिया,* एस.वी. ''पिज़ारो'' से लिया गया।[34]यह उदाहरण बिली ग्राहम, *अप्रोचिंग हूफबीट्स: द फोर हॉर्समेन ऑफ द अपोकलिप्स* (न्यू यार्क: ऐवन बुक्स, 1985), 242-43 से लिया गया था।[35]वारेन डब्ल्यू वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 610. आप इन उदाहरणों में और जोड़ सकते हैं।[36]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''पृष्ठ 118'' पर वेदी के विषय में नोट्स देखें।[37]मैक्गुइगन, 238. [38]हमेशा ''दिया गया'' वाक्यांश पर ध्यान दें जो इस बात पर फिर से जोर देता है कि नियन्त्रण *परमेश्वर* का है।[39]इस कटोरे की मिस्र पर आने वाली विपत्तियों से कोई समानता नहीं है। यशायाह 49:8-10 पुराने नियम की पृष्ठभूमि के लिए हो सकता है। आग का इस्तेमाल वचन में बार-बार परमेश्वर के न्याय के प्रतीक के रूप में किया गया है। (देखें भजन संहिता 97:3-7; 104:4; यशायाह 47:13, 14; 50:11.)[40]सूर्य की तपिश से कष्ट के अपने उदाहरणों का इस्तेमाल करें। मुझे कपास और मक्की गोड़ने के लिए बिताया गरमी का मौसम याद आता है। बहुत *गरमी* होती है!

[41]पुराने नियम के एक और समानांतर के लिए देखें आमोस 4:9. [42]इस पर हम अगले पाठ में विस्तार से चर्चा करेंगे।[43]फिर से याद रखें कि रोमी साम्राज्य के पतन के कारणों में से एक प्राकृतिक विनाश था।[44]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 194. यह भी जोड़ा जा सकता है कि मसीह व्यक्ति के लिए वही विपत्ति प्रभु में बढ़ने का अवसर हो सकती है।[45]यहेजकेल 36:31, 2 तीमुथियुस 2:8 और यहूदा 17 में ''स्मरण'' शब्द पर ध्यान दें। इस पाठ का इस्तेमाल करते हुए आप इन आयतों को ऊंचे स्वर में पढ़कर इन पर टिप्पणियां कर सकते हैं।[46]मौरिस 190 में उद्धृत, चक कोलक्लेजर, *द ओवरकमर्स।*

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या अधिकतर लोगों को मालूम है कि परमेश्वर उनके पापों का ''स्मरण करता'' है? यदि उन्हें मालूम है, तो क्या ऐसा लगता है कि उन्हें इसकी परवाह है? क्या उन्हें परवाह करनी चाहिए?
2. सात मुहरों, सात तुरहियों और सात कटोरों के सम्बन्ध पर चर्चा करें।
3. सात तुरहियों और सात कटोरों में तुलना करें। उनमें सामान्य बात क्या है? उनमें भिन्नता क्या है?
4. आपको क्या लगता है कि कटोरे मुख्यतया अस्थायी न्याय की बात करते हैं या अन्तिम न्याय की? पाठ के अनुसार कौन सी तीन प्रासंगिकताएं बनाई जा सकती हैं?
5. मिस्र की दस विपत्तियों की कहानी पर विचार करें। ये विपत्तियां प्रकाशितवाक्य 16 से कैसे मेल खाती हैं?
6. पहले कटोरे के उण्डेले जाने पर क्या हुआ? यह कटोरा उण्डेले जाने पर किसे कष्ट हुआ?
7. क्या सात कटोरों के रूपक का अर्थ शब्दश: लिया जाना चाहिए?

8. दूसरे कटोरे के उण्डेले जाने पर क्या हुआ? तीसरे पर क्या हुआ?
9. तीसरे कटोरे से यह कैसे पता चलता है कि (1) अपने न्याय का कारण लोग स्वयं ही हैं, और (2) आमतौर पर ''दण्ड अपराध के अनुसार ही होता है''?
10. चौथा कटोरा उण्डेले जाने पर क्या हुआ? इस पर प्रतिक्रिया क्या थी? क्या लोग आज भी अपने ऊपर स्वयं लाने वाली समस्याओं के लिए परमेश्वर को दोषी ठहराते हैं?
11. हम क्या कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारे पापों का ''स्मरण'' न करे?

परमेश्वर के क्रोध के सोने के कटोरे उण्डेलते हुए स्वर्गदूत (16:1)

पहला कटोरा (16:2)

दूसरा और तीसरा कटोरा (16:3, 4)

चौथा कटोरा (16:8, 9)